डॉ मनोज कुमार सिंह

हिन्दी विभाग

मुंशी लाल आर्य कॉलेज, कसबा

पूर्णियॉ विश्वविद्यालय की अंगीभूत इकाई

NAAC " B" Grade

''छायावाद का सामान्य अर्थ हुआ प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य शुक्ल लिखते हैं– यह अप्रस्तुत योजना ही प्रतीकवाद या चित्रभाषा है, जो रवीन्द्र काव्य की रहस्यवादी कविताओं में है। आचार्य शुक्ल ने 'चित्रभाषा में लौकिक प्रेम' की अभिव्यक्ति' को छायावाद मान लिया था, लेकिन बाद में वे स्वीकार करते हैं– ''छायावाद की शाखा के भीतर धीरे–धीरे काव्यशैली का बहुत अच्छा विकास हुआ, इसमें संदेह नहीं।'' जब इसका भान आचार्य शुक्ल को हुआ तो उन्होंने लिखा–'इसमें छायावादी भावावेश की आकुल व्यंजना' हुई है। इसिलए उन्हें 'लाक्षणिक वैचित्रय, मूर्त प्रत्यक्षीकरण, भाषा की वक्रता, विरोध चमत्कार, कोमल पदविन्यास इत्यादि काव्य का स्वरूप संघटित करने वाली प्रचुर सामग्री दिखाई पड़ी।' इस प्रकार आचार्य शुक्ल ने प्रथमतः जिस छायावाद को केवल अप्रस्तुत योजना के लिए बताया, उसे ही 'काव्य का स्वरूप संघटित करने वाली प्रचुर सामग्री' से सम्पन्न बताया। वस्तुतः छायावाद का काव्य विकास के हिसाब से शुक्लजी का दृष्टिकोण बदला। उनका कहना है –'छायावादी कविता अपनी सीमाओं के बावजूद काव्यभाषा की अभिव्यंजना शक्ति बढ़ाने में सफल हुए हैं। उन्हांने भाषा को मार्मिक और चित्र–व्यंजना में समर्थ बना दिया है और उसकी कल्पनाएँ विशद, प्रगल्भ और रमणीय है।'

'छायावादी' काव्य

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'छायावादी' काव्य को समझने के क्रम में शब्द–शक्ति, प्रभाव–साम्य वाले अप्रसतुत योजना और 'कल्पना–व्यापार इत्यादि पर विचार किया। उन्होंने कुंतल के 'वक्रोक्तिवाद' और क्रोचे के अभिव्यंजनावाद पर गंभीरतापूर्वक विचार किया है। उनके अनुसार 'वचन की जो वक्रता भाव प्रेरित होती है, वही काव्य होती है।'

काव्य का साध्य

आचार्य शुक्ल के अनुसार काव्य का साध्य 'पाठकों' के अन्तःकरण का परिष्कार करना, उसके हृदय को स्वार्थ के संकुचित दायरे से मुक्त करना–सामान्य भूमि पर ले जाना और उन्हें समस्त जड़–चेतन सत्ता में एक ही राग तत्व की स्थिति अनुभव कराना है।'

- आचार्य शुक्ल स्वयं 'चिंतामणि' में लिखते हैं'– ''अब प्रश्न यह है कि काव्य की रमणीयता किसमें रहती है? वाच्यार्थ में अथवा लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ में। इसका बेधड़क उत्तर यही है कि वाच्यार्थ में।''
- 'भाव चित्त की चेतन दशा विशेष मात्र नहीं है, बल्कि प्रत्ययबोध, अनुभूति और वेगयुक्त प्रवृति का गूढ़ संश्लेषण है।'' आचार्य शुक्ल के भाव संबंधी विचार के संदर्भ में रामचन्द्र तिवारी लिखते हैं– ''भावों की सामाजिक उपयोगिता, शील एवं सद्वृतियों से उसके संबंध, उनकी प्रेष्यता–अप्रेष्यता, उनके बोध के लिए अन्तःकरण के विकास की स्थिति, उनकी प्रयत्नोत्पादिनी शक्ति, तथा उन पर सभ्यता के विकास का प्रभाव आदि दृष्टियों से' विचार किया गया है।''

लोकमंगल की साधनावस्था और आनन्द की सिद्धावस्था

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने विस्तृत अध्ययन, सूक्ष्म अन्वीक्षण बुद्धि और मर्म ग्राहिणी प्रज्ञा से हिन्दी आलोचना को मौलिक पारिभाषिक शब्दों से नवाजा है। उन्होंने एक शब्द दिया – 'बीज–भाव' और 'करूणा' एवं प्रेम को काव्य का बीजभाव मानते हुए कहा कि लोकमंगल की साधनावस्था या प्रयत्न को लेकर चलने वाले प्रबंध काव्यों का बीजभाव करूणा है। आचार्य शुक्ल आनन्द की साधनावस्था का मूलभाव 'करूणा' को मानते हुए लिखते हैं–''करूणा की गति रक्षा की होती है और प्रेम की रंजन की ओर। लोक में प्रथम साध्य रक्षा है।'' वे प्रयत्न पक्ष के अन्तर्गत आनन्द की साधनावस्था के भावों में पीड़ा, बाधा, अन्याय, अत्याचार का दमन आदि मानते हैं। कविता के प्रयत्न पक्ष को अहमियत देने का मूल कारण शुक्ल का समकालीन यथार्थ है। वह युग उपनिवेशवाद और सामंतवाद से संघर्ष का काल था।
- वे आनन्द की सिद्धावस्था का मूल भाव 'प्रेम' को मानते हैं। वे लोक जीवन के संश्लिष्ट प्रेम को एकांतिक प्रेम से श्रेष्ठ मानते हैं। आचार्य शुक्ल मानव जीवन के कुछ विशेष भाव को आनन्द की सिद्धावस्था मानते हैं– यथा माधुर्य, सुषमा, विभूति, उल्लास, प्रेम व्यापार इत्यादि।

"जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है।" **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रसानुभूति की भावदशा में व्यक्ति हृदय का लोक–हृदय में लीन होना, हृदय का व्यक्तिगत राग–द्वेष से मुक्त होना और सृष्टि–सौंदर्य के संश्लिष्ट चित्रण में तल्लीन होना मानते है। भावदशा और रसदशा में भाव स्व–पर, मम्–ममेतर, व्यक्तिबद्धता से मुक्त महसूस करता है। यही रसदशा उसके आनन्द का कारण है।
- आचार्य शुक्ल लिखते हैं– "हृदय की मुक्तदशा में होने के कारण दुख भी रसात्मक और आनन्दप्रद होता है।" रस दशा में भावक ममत्व बोध से मुक्त होता है।
- भावों का परिष्कार और विस्तार को साहित्य का प्रयोजन मानते हुए उन्होंने भावयोग को कर्मयोग और ज्ञानयोग के समतुल्य माना है।

email : mpmahananda@gmail. com

डॉ मनोज कुमार सिंह